पाठ 16

काव्य-माधुरी

-संकलित

भक्ति कालीन काव्य धारा में सूर, तुलसी, रसखान, धरमदास का अप्रतिम स्थान है। इन भक्त–संत कवियों की भाव अभिव्यक्ति में भाषा और शैली की अपनी विविधता अवश्य है पर सार एक ही है ईश्वर के साकार रूप अथवा निराकाररूप की भक्ति में अपने को लीन करना। सूर जहाँ ब्रजभाषा में कृष्ण की बाल लीला का गायन करते हैं वहीं तुलसी अवधी में राम के चरित्र का रेखांकन करते हैं। यही स्थिति रसखान की है जो कृष्ण की भक्ति में इतने समर्पित हैं कि हर जन्म में ब्रज में बसने को व्याकुल हैं। धरमदास जी जो बहुश्रुत कबीर के शिष्य हैं अपनी मातृभाषा में सांसारिकता से मुक्ति और सद्गुरु का संदेश सुनाते हैं, जिससे मानव जन्म की प्राप्ति को सार्थक बनाया जा सके।

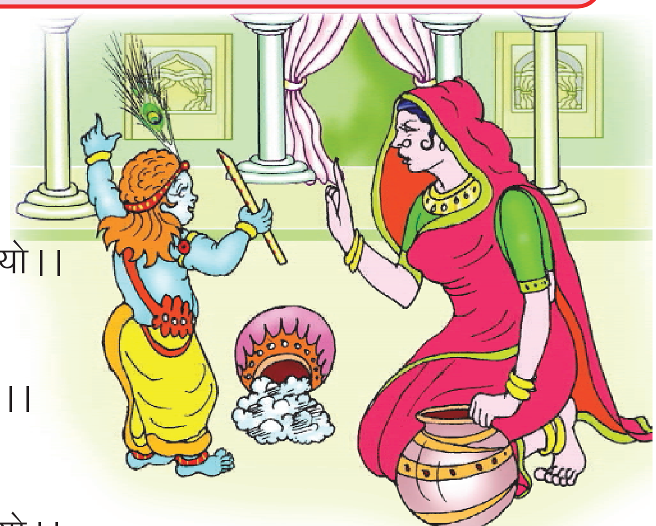

मैया मोरी, मैं नहिं माखन खायो।
भोर भयो गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो।।
चार पहर बंसीबट भटक्यो, साँझ परे घर आयो।
मैं बालक बहियन कौ छोटौ, छींकौ केहि विधि पायो।।
ग्वाल–बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो।
तू जननी मन की अति भोरी, इनके कहे पतियायो।।
जिय तेरे कछु भेद उपजि है, जानि परायो जायो।
यह लै अपनी लकुटि कमरिया, बहुतहिं नाच नचायो।।
सूरदास, तब बिहँसि जसोदा, लै उर कंठ लगायो।।

— सूरदास

बैठी सगुन मनावत माता।
कब अइहैं मेरे लाल कुसल घर, कहहु काग फुरि बाता।।
दूध भात की दोनी देहौं, सोने चोंच मढ़ैहौं।
जब सिय सहित बिलोकि नयन भरि, राम–लखन उर लैहों।।
अवधि समीप जानि जननी जिय, अति आतुर अकुलानी।

गनक बुलाइ पाँय परि पूछति, प्रेम मगन मृदु बानी।।
तेहि अवसर कोउ भरत निकट ते, समाचार लै आयो।
प्रभु आगमन सुनत तुलसी मनो, मीन मरत जल पायो।।

– तुलसी

मानुष हौं तो वही रसखानि, बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जौ पशु हौं तो कहा बस मेरौ, चरौं नित नंद की धेनु मझारन।।
पाहन हौं तो वही गिरि कौ, जो धर्‌यौ कर छत्र पुरंदर कारन।
जो खग हौं तो बसेरौ करौं, नित कालिंदी कूल कदंब की डारन।।

– रसखान

हमार का करै हाँसी लोग।
मन मोर लागे है सतगुरु से, भला होय के खोट।।
जब से सतगुरु ज्ञान दए हैं, चले न केहू के जोर।
मात रिसाई, पिता रिसाई, रिसाय बटोहिया लोग।।
ज्ञान खड़ग तिरगुन कौ मारौ, पाँच पचीसो चोर।
अब तौ मोहि ऐसन बन आए, सतगुरु रचे संजोग।।
आवत साथ बहुत सुख लागै, जात बियापे रोग।
धरमदास बिनबै कर जोरों, सुनौ हो बंदी छोर।।
जाके पद त्रय लोक से न्यारा, सो साहब कस होय।।

– धरमदास

टिप्पणी–

जो धर्‌यो कर छत्र पुरंदर कारन = कृष्ण ने गोकुलवासियों को इंद्र की पूजा न करके गोवर्धन पर्वत की पूजा करने के लिए प्रोत्साहित किया था। इससे इंद्र ने नाराज होकर गोकुल पर बड़े वेग से वर्षा कराई। कृष्ण ने तब गोवर्धन पर्वत के नीचे सारे गोकुलवासियों को बुलाकर उनकी रक्षा की थी।

दूध–भात की .... मढ़ैहों = आज भी लोगों में ऐसी मान्यता है कि घर में अगर कोई प्रिय व्यक्ति विदेश से आ रहा हो तो कौआ प्रातः ही मुँडेर पर बैठकर 'कॉंव–कॉंव' करता है। ऐसा ही दृश्य राम के वनवास से लौटने के पूर्व कौशल्या माता के सम्मुख उपस्थित हुआ था।

अभ्यास

पाठ से

1. माखन न खाने की सफाई कृष्ण किस प्रकार देते हैं?
2. बाल कृष्ण की किन बातों को सुनकर माता यशोदा को हँसी आ गई?
3. 'काग चोंच को सोने से मढ़वा दूँगी', कौशल्या कौए को सम्बोधित करती हुई यह क्यों कहती हैं?
4. रसखान के ब्रजभूमि से प्रेम के दो उदाहरण लिखिए।
5. 'ज्ञान खड्ग तिरगुन को मारे' से धरमदास जी का क्या आशय है?
6. धर्मदास ने 'बंदी छोर' किसे कहा है और क्यों?
7. माँ अपने बच्चों के कुशल–मंगल के लिए क्या–क्या करती है?

पाठ से आगे

72T7S9

1. क्या कारण है कि रसखान पुनर्जन्म में किसी भी रूप में ब्रज में जन्म लेने के लिए विधाता से याचना करते हैं? उनकी इस याचना के बारे में विचार कर लिखिए।
2. भावार्थ लिखिए–

   (क) पाहन हौं तो वही गिरि कौ, जो धर्‌यो कर छत्र पुरंदर कारन।
   जो खग हों तो बसेरौ करौं, मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन।।

   (ख) जब से सद्‌गुरु ज्ञान दए हैं, चले न केहू के जोर।
   मात रिसाई, पिता रिसाई, रिसाय बटोहिया लोग।।
3. 'मेरा प्रिय कवि' विषय पर एक पृष्ठ का निबंध लिखिए।
4. आप भी अपने बचपन में अपनी माँ से अवश्य रूठे होंगे। तब आपने कैसे–कैसे रूप धारण किए होंगे, यादकर लिखिए।
5. सूरदास, तुलसीदास, रसखान, धरमदास की कविताओं में क्या समानता दिखाई पड़ती है लिखिए।

भाषा से

1. 'ज्ञान' शब्द के 'न' में 'ई' प्रत्यय लगाने से शब्द बना है 'ज्ञानी'। ऐसे ही 'दान', 'मान', 'ध्यान' शब्दों में 'ई' प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
2. इन शब्दों को छत्तीसगढ़ी बोली में लिखिए।

   दूसरा, पायो, गाय, निकट, कछु, बहियन, परायो, सिर, लगन।
3. इस पाठ में अनेक तद्भव शब्दों का प्रयोग हुआ है। निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए।

   सोना, नाच, साँझ, दूध, पाँय, चोंच, छुद्र।

   'जानि जननी जिम' में 'ज' की आवृत्ति होने से अनुप्रास अलंकार है।
4. इस पाठ में से अनुप्रास अलंकार के कोई दो उदाहरण चुनकर लिखिए।

7333TH

5. नीचे लिखी काव्य–पंक्तियों को छत्तीसगढ़ी में स्पष्ट कीजिए –

   क. यह लै अपनी लकुटि कमरिया, बहुतहिं नाच नचायो।

   ख. कब अइहैं मेरे लाल कुसल घर, कहहु काग फुरि बाता।

योग्यता विस्तार

1. संत धरमदास हिन्दी के प्रसिद्ध कवि और समाज–सुधारक कबीरदास जी के शिष्य थे। इनके अन्य पद खोजिए और उन्हें कक्षा में सुनाइए।
2. रसखान के कुछ सवैए खोजिए और उन्हें कक्षा में सुनाइए।
3. कक्षा में अंत्याक्षरी प्रतियोगिता आयोजित कीजिए जिसमें छंदों का ही प्रयोग हो।
4. सूरदास, तुलसीदास, रसखान व धरमदास जी के जीवन वृत्त पर शिक्षक से चर्चा कीजिए।

73BYVJ